

— 3) *ausbreiten, verbreiten in, durch, an Etwas*: घ्रावकृत्तो वितन्वाना  
 TAITT. UP. 1, 4, 1. वि भानुं विश्रयातनत् RV. 8, 3, 1. वनेषु व्युत्तरिन्नं त-  
 तान् वाजमर्वत्सु पर्य उस्त्रियासु 5, 83, 2. शिशोः शीर्यसु वितता हिरण्ययीः  
 54, 11. (नैरे) शिखाविततमूर्धन्नी HARIV. 4541. निर्धुतान्वायुना पश्य वितता-  
 न्युष्पसंचयान् R. 2, 93, 10. रोहिमांसं पुनश्चापि विततं ह्याश्रमं प्रति 5, 36,  
 35. नस्यास्त्रवितता ह्यापो वरुणास्य विनिःसृताः HARIV. 10941. कीर्तिं वि-  
 प्रुद्धा सुरलोकगोतां विताय BHĀG. P. 7, 10, 12. विद्याधरोरगैः । वितायमा-  
 नयशसः 4, 1, 22. वियोगो वैराग्यं दृढयति वितन्वन् शममुखम् PRAB. 93, 12.  
 घोषं विततम् RV. 5, 34, 12. विततिर्नादैः PRAB. 3, 14. यज्ञस्य दोहो विततः  
 पुरुत्रा VS. 8, 62. वितत *ausgedehnt, weit, breit* Kir. 5, 11, 45. द्वात्रिंश-  
 त्मरुहयोगेन BHĀG. P. 5, 16, 7. द्वाचिद्रुततरं याति (गङ्गा) कुटिलं द्वाचि-  
 दागतम् । विततं द्वाचित् R. 1, 44, 25. विततं सिन्धोर्वपुः BHARTR. 2, 68. वि-  
 ततह्वानु देहस्य न यौ संभवं मही HARIV. 12373. महति वितते संसारे  
 PRAB. 94, 2. वितते यौवराज्ये ऽभ्यपिच्यत wohl mit grosser Machtvollkom-  
 menheit verbunden RĀGĀ-TAR. 5, 22. — 4) *breit machen den Leib* so v.  
 a. *sich drohend entgegenstellen*: यत्र प्रुरासस्तन्वा वितन्वते RV. 6, 46, 12.  
 अकृपुवस्तन्वस्तन्वते वि 5, 13, 3. — 5) vom Opfer, Gebet, von festlich-  
 en Cerimonien, Kasteiungen u. s. w.: *in's Werk setzen, beginnen, aus-  
 führen*: तयो यज्ञं वि तन्वते RV. 5, 13, 4. AV. 4, 14, 4, 17, 1, 18. AIR. BR.  
 1, 4. सततन्वितन्वाना याज्ञकाः MBH. 7, 3027. कर्मतन्त्रं वितनुतात् BHĀG.  
 P. 4, 2, 22. क्रियातन्त्रविततायिता 8, 13, 36. यज्ञेन युष्मद्विषये द्विजातिभिर्वि-  
 तायमानेन 4, 14, 22. 6, 13, 21. व्यतानीत् — कर्म BHART. 1, 11. सुरयागम्  
 NALOD. 1, 25. इष्टो विततायो संस्थितायो वा LĀTJ. 9, 9, 9. ĀCV. GRHJ. 1, 6.  
 अमुं यज्ञं विततमेयाय KHĀND. UP. 4, 10, 7. AV. 2, 35, 5. 18, 4, 13. M. 3, 28.  
 MBH. 1, 2880. 13, 3022. 14, 2817. BHAG. 4, 32. R. 2, 45, 28. ÇĀK. 193. KU-  
 MĀRAS. 2, 46. वि तन्वते धियो अस्मा अयांसि RV. 5, 47, 6. कन्यकातनयकौ-  
 तुकाक्रियाम् — वितेनुतः RAGH. 11, 53. कौशाम्ब्री विततोत्सवाम् KATHĀS.  
 18, 8. व्यतनोदाहृषां तपः RĀGĀ-TAR. 1, 315. विराटपर्वप्रथोती भावद्वीपो  
 (ein Commentar) वितन्वते Verz. d. Oxf. H. 1, a. b. opfern: तत्र क्वा प-  
 शून्मेध्यान्विततयायतने शुभे HARIV. 3818. — 6) *an den Tag legen*: तेन  
 वीर्यं वितन्वता R. 4, 9, 89. विततपृथुतरारम्भयत् BHARTR. 2, 59, v. l. वित-  
 नुते न भूयुगं भङ्गुम् SĀH. D. 53, 7. अनुप्रकं दृष्ट्वा वितन्वन् BHĀG. P. 1, 41,  
 11. वितत *manifestē* 3, 12, 48. *bewirken, hervorbringen*: ध्यातश्चेतसि कौ-  
 तुकं वितनुते कोपो ऽपि वामध्रुवः SĀH. D. 34, 7. — Vgl. वितति, वितान.  
 — अनुवि *sich ausdehnen über*: इमान्वा एष लोकानभिवितनुते यो ऽपि  
 आधते ÇAT. BR. 12, 4, 1, 2.  
 — अभिवि *beziehen* (mit der Sehne): इक्ष्वाभि वि तन्भे आर्त्वा इव ज्य-  
 यो AV. 1, 1, 3. *überziehen, zudecken*: उत्कारे वा चर्मणाभिवितन्वति ÇĀKĀ.  
 ÇR. 17, 5, 6. पूर्वस्याङ्गः परिशिषति कर्म तडुत्तरेणाभिवितन्वते ऽङ्गा ÇAT.  
 BR. 11, 5, 5, 13.  
 — घ्रावि *bescheinen, beleuchten*: गभस्तयो ऽर्वाचीनास्त्रील्लोकानावित-  
 न्वानाः BHĀG. P. 5, 20, 37.  
 — प्रवि 1) *ausdehnen, ausbreiten*: प्रवितत *ausgedehnt, sich weithin  
 verbreitend, weit*: निष्पेतुरूपवोर्यस्य ज्वाला प्रवितता मुखात् HARIV.  
 13680. दिक्संसक्तप्रविततधन MECH. 104. प्रविततकेशर्पाङ्गं ÇIC. 3, 55. प्र-  
 विततोद्गर KATHĀS. 26, 142. — 2) *an ein heiliges Werk gehen, beginnen*:  
 रणायज्ञे प्रवितते MBH. 5, 5317.  
 — सम् 1) *sich verbinden mit, sich anschliessen an*: सं र्षिभिस्ततनः

सूर्यस्य RV. 7, 2, 1. अघर्षुं निष्क्रामतं प्रस्तोता संतनुयात् LĀTJ. 1, 11, 2. या  
 ते तन्वीचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चनुषि । या च मनसि संतता PRAÇ-  
 KOP. 2, 12. — 2) *überziehen, bedecken*: आण्डीकं कुमुदं सं तनोति AV. 4,  
 34, 5. भूमिं संतन्वतीरितं घोषधयः 8, 7, 16. माल्यैश्च विविधैः — संतता  
 शुश्रुभे भूमिः R. 5, 14, 46. 6, 86, 32. (तीर्थानि) कुमुदैः संततानि HARIV. 12669.  
 संततो वाणैर्धार्तरौ R. 6, 21, 1. MBH. 4, 1720. कृशो धमनि संततः 3, 474.  
 13583. 7, 1753. 13, 1918. 15, 692. BHĀG. P. 9, 3, 14. शिराधमनि संतत HARIV.  
 14532. VARĀH. BRH. S. 67, 3, 7, 71. — 3) *zusammenfügen, in ununterbro-  
 chener Verbindung erhalten, fortlaufend machen*: यज्ञेन यज्ञं संतनोति संत-  
 तं ह्येवास्पैतद्वत् भवति ÇAT. BR. 3, 2, 2, 7. 26. संतनु शिष्यस्य कर्मच्छिद्रं वित-  
 न्वतः BHĀG. P. 8, 23, 14. (धातुः) नामानि वृषाणि मनोवचोभिः संतन्वतः 1, 3, 37.  
 अच्छिद्रं संतनुषु व्रतं मम ÇĀKĀ. GRHJ. 2, 13. ततं विलिष्टं संतनोति संद-  
 धाति ÇAT. BR. 6, 4, 3, 1. 7, 2, 1, 12. 9, 1, 2, 16. तौ नानैवास्तां तौ समतन्वन्  
 4, 2, 18. 11, 2, 6, 3. आयुषः प्राणं सं तनु । प्राणादपानं सं तनु u. s. w. TBR. 1,  
 5, 2, 1. यथा पुरुषः सार्वभिः संततः *zusammengehalten, verkettet* TS. 5,  
 3, 9, 1. तनुसंतत *gewebt* AK. 3, 2, 50. *genäht* H. 1487. संतत *zusammen-  
 hängend, fortlaufend, ununterbrochen* P. 6, 1, 144. VĀRT. 1. AK. 1, 1, 4,  
 61. H. 1471. ÇAT. BR. 1, 3, 5, 13. 7, 2, 4. 3, 2, 2, 7. 4, 2, 3, 3. 6, 3, 1, 5. अशो-  
 कवनिकाम् — संततहुमाम् R. 5, 20, 8. आधूतान्वायुना पश्य संततान्यु-  
 ष्यसंचयान् R. GORR. 2, 104, 9. संतता गतिरेतस्य नैष तिष्ठति MBH. 3, 11831.  
 संततासार HARIV. 4583. संतताश्रुनियानतात् R. 6, 74, 24. KATHĀS. 10, 37.  
 BHĀG. P. 1, 3, 38. MĀRK. P. 13, 41. निशा 16, 32. तमसु SĀH. D. 1, 7. अंतंतत  
 ÇAT. BR. 1, 3, 5, 16. स्वज्ञानाश्रु — अतिसंततम् RAGH. 5, 35. संततम् *adv. gaṇa  
 स्वरादि* zu P. 1, 1, 37. DHĪRTAS. 71, 6. संततवर्षिन् 96, 9. 69, 5. HARIV.  
 12747. PRAB. 43, 6. Vgl. संतत. — 4) *in's Werk setzen* TS. 2, 6, 3, 3. 3,  
 2, 1, 3. 6, 3. मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यंस्तानि त्रेतायां वृद्ध्या संतता-  
 नि MUND. UP. 1, 2, 1. — 5) *an den Tag legen*: उद्योगम् — संतनु BHART.  
 5, 47. — *caus. ausführen, zu Ende führen lassen*: कर्म संतानयामास  
 सोपाध्यायार्त्वाग्निभिः BHĀG. P. 4, 7, 16. — Vgl. संतति, संतान.  
 — अनुसम् 1) *sich verbreiten längs, über, überziehen, erfüllen*: (अ-  
 शोकवनिकाम्) राजतैः काञ्चनैश्च पादपैरनुसंतताम् R. 5, 16, 8. — 2) *nach  
 allen Seiten verbreiten, ausbreiten*: अघ्नश्च मूलाच्यनुसंततानि (अघ्नत्यस्य)  
 BHĀG. 13, 2. (ब्रह्म) अनुसंततम् BHĀG. P. 4, 13, 8. MBH. 12, 7731. — 3) *an-  
 schliessen, folgen lassen*: यज्ञमुख एव यज्ञमनु संतनोति TS. 3, 1, 3, 1.  
 देवान् च पितृनु संतनोति, पितृनु च प्रजा अनु संतनोति 5, 2, 3, 4. इदं मे प्रा-  
 तःसवनं माध्योदनं सवनमनुसंतनुत KHĀND. UP. 3, 16, 2. 6. — 4) *fortsetzen*:  
 इदं मे ऽयं वीर्यं पुत्रो ऽनुसंतनवत् ÇAT. BR. 1, 9, 3, 21. VS. S. ८५. ÇAT. BR.  
 3, 5, 2, 2. 6, 2, 13. यज्ञेनैव यज्ञमनुसंतनमः 12, 4, 1, 4. अनु मा संतनुहि प्रज-  
 या पशुभिः ÇĀKĀ. ÇR. 2, 12, 11.  
 — अभिसम् 1) *sich verbreiten über, überziehen, überdecken*: भूमिर्निर्-  
 त्तरा चेयं बलराष्ट्राभिसंतता HARIV. 4986. 5465. — 2) *Etwas hinüberrei-  
 chen lassen* (von einer Seite zur andern), *zur Verbindung machen*: यथा  
 शालयि पत्नी मध्यमं वंशमभि संयापच्छति । एव संवत्सरस्य पत्नीसि दिवा-  
 कृत्त्यमभिसंतन्वति TBR. 1, 2, 3, 2.  
 — उपसम् *in unmittelbare Verbindung setzen mit*: एतयायेयं गायत्रमु-  
 पसंतनुयात् ĀCV. ÇR. 6, 5. प्रपवेन 5, 7. 9. 4, 15. — Vgl. उपसंतान.  
 2. तन् (= 1. तन्) *wahrsch. f.; nur dat. instr. und abl.* 1) *Fortdauer,  
 Ausbreitung, Folge; Fortpflanzung*: अग्ने तोकस्यं नृस्तेनं तनूनाम् (बोधि)